

बुध्दम् शरणम् गच्छामि_धम्मम् शरणम् गच्छामि_संघम् शरणम् गच्छामि !!

प्रो. राजकुमार लहरे

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय पी. डी. वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

बुध्दत्व का अर्थ होता है— जागना, बोध होना। जागने से तात्पर्य है— सचेत होना; अर्थात् मैं कौन हूँ, कैसा हूँ, संसार क्या है? आदि प्रश्नों को समझना। बुध्द, बोध, बुध्दत्व (प्रज्ञा); ये तीन अवस्था है आत्म-ज्ञान होने का। इसी अवस्था को पाने के लिए जागना पड़ता है। अर्थात् जिसका चेतना जाग्रत अवस्था में है, और जो बोध की पराकाष्ठा प्रज्ञा तक पहुँचा हो, बुध्द Simple of knowledge का प्रतिरूप है और यह संसार में, ऐसा पहली बार घटित हुआ— गौतम बुध्द के रूप में! और इसे Light of Asia कहा गया। तथा बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को नव बुध्द।

संसार दुःख के हेतु, जन्म-मृत्यु दो छोर, जिंदगी संघर्षमय, इन्हीं के बीच उत्थान-पतन का अनवरत क्रम है। किसी की अति और अत्यल्प ठीक नहीं, अपितु दोनों के मध्यम आष्टागिक मार्ग का उपदेश बुध्द ने दिया और बुध्द के मार्ग को लोगों ने सहज स्वीकार कर स्वेच्छा से धारण किया, यही सच्चा धर्म है। बुध्दत्व ज्ञान की चरमोत्कर्ष है और ज्ञान वह साधन है जिससे व्यक्ति देवत्व पद को प्राप्त कर सकता है। जहाँ हृदय में प्राणिमात्र के प्रति, किसी भी प्रकार से भेदभाव, छुआछूत, उँच-नीच, हेयदृष्टि न हो तथा मन में सत्य, समता, अहिंसा, सदाचार, पंचशील, त्याग, अपनापन हो। जिसे सबसे पहले सिध्दार्थ ने पाया और गौतम बुध्द हो गया।

मूल शब्द : बुध्द, प्रज्ञा, शील, संघ, मध्यमा प्रतिपद्, सत्य, समाधि, मठ-विहार, अनित्यवाद।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति अव्यक्त तथ्यों को व्यक्त तत्वों के साथ तन-मन से एकाकार हो, विभिन्न मत-मतांतरों से समझने का प्रयास करता रहा है। प्राकृतिक घटना, परिवर्तन के बीच संबंध को व्याख्यायित करने का उद्योग व वर्चस्व की लड़ाईयों मनीषियों द्वारा होता रहा है। जिससे समाज में कल्पना, आडम्बर, ज्ञान-दासता का दौर समावेश होता गया। जिससे लोग सत्य से विमुख होते गये और इनका जीवन अंधकार-कारा से घिरता गया और मुक्ति के नाम पर मानसिक, आर्थिक व शारीरिक लूटपाट शुरू हुआ। तथा तथाकथित ज्ञानी सुख-भोग करने में तल्लीन होते गये। राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक केंद्रों में अस्वस्थ परिवेश निर्मित होने लगा। जिससे भौतिक-सुख जीवन में सर्वोपरि होता गया और नैतिकता का पतन होने लगा। जब आदर्श-व्यक्तित्व पथभ्रष्ट होते गये तो उन्हीं के अनुकरण फलस्वरूप सामान्य जनता का जीवन-धारा भी इन्हीं खाईयों में गिरने लगा। नैतिक पतन का दौर शुरू हुआ; ऐसी परिस्थिति में सत्य-मार्ग तथा आत्म-अनुशासन को सुझाने वाला गौतम बुध्द का भारत-भूमि में जन्म होना, यह एक विलक्षण और अद्वितीय घटना है।

बुध्द-जीवन : सिध्दार्थ का जन्म शाक्यकुल में शुध्दोधन के घर 563 ई. पू. लुम्बिनी में वैशाखी पूर्णिमा के दिन कुलरीति के अनुरूप महामाया प्रसव के लिए पिता के घर जा रही थी, तभी मार्ग में शाल वृक्ष के नीचे बालक का जन्म हुआ। चूँकि, जाने का अर्थ सिध्द होना समझकर सिध्दार्थ नामकरण किया गया। सिध्दार्थ का अर्थ है— अर्थ सिध्द हुआ। असिति ऋषि ने बालक को देखकर हँसते व रोते हुए कहा कि यह चार बातों को देखकर बुध्द हो जायेगा और नहीं देखा तो चक्रवर्ती राजा बनेगा। ये चार बातें निम्नवत् हैं—

1. बुढापा— किसी इंसान की कमजोर अवस्था।
2. बिमारी— किसी रोगी की असहाय स्थिति।
3. मृत्यु— किसी इंसान की मृत्यु का मातम।
4. संन्यासी— किसी साधु की मुक्त दशा।

जन्म के कुछ दिनों उपरांत महामाया के निधन के होने पर मौसी गौतमी ने लालन-पालन किया, इसलिए सिध्दार्थ गौतम कहलाने लगे। राजा शुध्दोधन ने व्यवस्था करते हुए यशोधरा से विवाह कर दिया कि सिध्दार्थ कभी भी उक्त दृश्य न देखे, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। वह 28-29 वर्ष की आयु में घर छोड़कर वनगमन कर बुध्दत्व को प्राप्त किया। बुध्दत्व वह अवस्था है— जहाँ व्यक्ति स्वबोध, आत्म-साक्षात्कार और कैवल्य को प्राप्त कर लेता है। यही बुध्द-जीवन है और बुध्द प्रकाषवान् होता है। जो दूसरों को मार्ग हमेषा सुझाता है। कबीर, रैदास, नानक, ओशो आदि सब अनुयायी हुए, ज्ञानी हुए, संत हुए, गुरु हुआ, ये संभवतः बुध्दत्व के स्तर तक नहीं पहुँच पाये। इसीलिए लोग इन्हें बुध्द नहीं कहा।

बौध्द-दर्शन : तेजुख; दुःख में दु का अर्थ होता है— बुरा और ख का अर्थ होता है— ख्याल। लोग जिससे बुरा लगे उससे दुर और ठीक लगे उससे जीवनपर्यंत पास होना चाहते हैं। तब तेजुख कब होता है ? दुःख-सुख नहीं है अर्थात् दुःख भी नहीं है, सुख भी नहीं है। तब बचता क्या है— है और यही है तेजुख है। दुःख को खशी से स्वीकार करें तथा सुख के समय भी सम रहें तो जो अवस्था होगी वही तेजुख का होगा। व्यक्ति सफलता के लिए कर्म-प्रपंच में उलझ जाते हैं। लेकिन जब सत्य से साक्षात्कार होता है तो उसे ज्ञान होता है कि वह अब तक व्यर्थ सुख-दुःख के फेरे में रहे हैं। तब उसे सत्य का ज्ञान होता है जो आर्य सत्य अर्थात् न बदलने वाला सत्य निम्नांकित है—

1. दुःख है— यदि किसी न किसी रूप में दुःख है, तो—
2. दुःख के कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. जब दुःख के कारण है, तब— कोई न कोई निवारण भी है।
4. उस निवारणमय दुःख से मुक्ति अनिवार्यतः है।

बुध्द पीपल वृक्ष के नीचे आत्म-ज्ञान प्राप्त किया। तब उन्हें अनुभव हुआ कि ज्ञान से सत्य तक पहुँचा जा सकता है और इसके लिए व्यक्ति को जाग्रत अवस्था में विवेक के द्वारा रहना चाहिए साथ ही ज्ञान के प्रसार करते हुए बताया कि—

1. सर्वव्यापी सत्य— ऐसा सत्य जो विष्व या ब्रम्हाण्ड में सदैव एक समान हो। सिसमें काल, स्थान का प्रभाव न पड़े।
2. विवेक बुद्धि— व्यक्ति एक समय के बाद कर्मकाण्ड को ही कर्म तथा कर्म करने के विधि विधान को ही ज्ञान मान लेता है। ऐसी स्थिति से उपर उठने के लिए विवेक बुद्धि होना नितांत आवश्यक है, इसके बिना लोग भटकते रहते हैं।
3. सम्यक समाधि संघ— सम्यक समाधि संघ का अर्थ है ऐसे लोगों का समूह जो समाधि का अभ्यास करता है। यह समिति, क्लब से भिन्न है। सम्यक समाधि संघ को समझने के लिए सर्वव्यापी सत्य, विवेक बुद्धि तथा सम्यक समाधि से UVS ले, जिसका अर्थ है— उच्चतम विकसित समाज। अर्थात् बुद्ध ने उच्चतम विकसित समाज का प्रसार किया।
4. माया से लगाव टूटे— व्यक्ति को किसी भी कार्य/घटनाओं से लगाव नहीं रखना चाहिए, यह नुकसानदेह होता है। यह लगाव से दूर होना ही सच्चा मुक्ति है। जिसे मोह कहते हैं। इसका मार्ग बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग से दिया। जो निम्नवत् है—

1. सम्यक दृष्टि 2. सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाणी 4. सम्यक कर्मात् 5. सम्यक आजीविका 6. सम्यक व्यायाम 7. सम्यक स्मृति 8. सम्यक समाधि। आठ अंगों को तीन तरह के लोगों में बाँटा जा सकता है—

1. जो बारुद पर बैठे होते हैं। सत्य की छोटी चिंगारी भी उनमें अनुभव प्रगट कर देती है। ऐसे लोग पूर्ण रूप से पात्र बन चुके होते हैं।
2. इस प्रकार के लोग सुखी लकड़ी की तरह होता है। थोड़ी मेहनत के बाद उनमें सत्य की आग जलती है। कर्म, प्रयत्न और विधि है।
3. इस तरह के लोग गीली लकड़ी के तरह से होता है। वे समाज में उलझे हुए हैं और कुछ राहत चाहते हैं। ऐसे लोगों के लिए सहाचार, शील का उपाय उपयुक्त है।

1. **बुद्ध बोध का पहला उपाय सम्यक दुष्टि** — जिन लोगों में सत्य सुनकर ज्ञान प्राप्त करने की संभावना थी। उन्हें सीधा सत्य बताया गया। बुद्धि और विचारों का सही इस्तेमाल होने पर समझ प्राप्त होती है। सम्यक विचारों के अनंरूप ही जीवन में घटनाएँ होती होती है। विचार हमारा व्यक्तित्व का आइना है। सत्य को झूठलाया नहीं जा सकता है।

2. **बुद्ध बोध का दूसरा उपाय संकल्प, कर्म, स्मृति और समाधि है। बोध का दूसरा उपाय के लिए पहला शब्द है—**

1. सम्यक संकल्प— सत्य पर आधारित संकल्प लेने से एक नई स्फूर्ति, ताजगी, साहस देखने को मिलता है। तब आयु विशेष महत्व नहीं रखता है।
2. सम्यक कर्मात् या प्रयास— बिना कर्म के सफलता कभी नहीं मिलता है।
3. सम्यक स्मृति— अपनी शक्ति, सामर्थ्य, गुणों के प्रति हमेशा सजग रहना ही जाग्रत स्मृति है।
4. समाधि— समाधि का अर्थ है। अपने मन का डूबकी लगाना, अपने अंदर जाना, मन का स्नान करना। समाधि से एकाग्रता, सहनशीलता, कार्यक्षमता, स्वास्थ्य तथा मन में ? शांति बढ़ती है और सम्यक समाधि से प्रज्ञा। समाधि में रुकावटें— षंका, तमोगुण या सुस्ती, काम—वासना, निराषा, नफरत या बदला की भावना।

3. **बुद्ध बोध तीसरा उपाय—** जिसके पास समय का अभाव है उसके लिए बुद्ध ने कहा है कि—

1. सम्यक वाणी— वाणी में हमेशा सकारात्मक भाव होनी चाहिए जिससे किसी व्यक्ति को ठेस न लगे। इसका मतलब चापलुसी से कदापि नहीं है।
2. सम्यक आचार अर्थात् व्यवहार— हमारा व्यवहार में किसी के गलत धारणा, मनोभाव, जुआ, हत्या, व्यभिचार, चोरी आदि के लिए कोई स्थान न हो।

4. **उपासकों के लिए सम्यक व्यायाम—**

1. **सम्यक व्यापार—** जीवन में ऐसा व्यापार या वयवसाय करना चाहिए जिससे किसी को अपने जीवन में कोई कठिनाई न हो। इससे मन में संतुष्टि मिल पायेगा।
2. **सम्यक व्यायाम—** बुद्ध ने लोगों को दो वर्ग में रखा— भिक्षु या श्रमण, उपासक या गृहस्थ। सभी के लिए कुछ अनुशासन/व्यायाम निर्धारित किये।
 1. हमारे अंदर कोई दुर्गुण नहीं है और भविष्य में न आये, इसके लिए व्यायाम।
 2. हमारे अंदर दुर्गुण है उसे बाहर निकालने के लिए व्यायाम। सभी व्यक्ति को अपने लिए स्वयं नियम निर्धारित करना चाहिए।
 3. हमारे अंदर आवश्यक गुणों का होना— आत्म—संयम, नम्र व सब्र व्यवहार, छल/कपट रहित रहना, बिमार की सेवा करना, मन में शांति बनाये रखना।
 4. हमारे अंदर गुणों को बनाये रखने के लिए प्रयास करना।

3. **मध्यम मार्ग—** भगवान बुद्ध ने अपने जीवन में घर में राजसी टाट—बाट तथा वन—गमन के बाद साधु—संन्यासियों, आडम्बरियों, पथभ्रष्ट अतियों के परिणाम को देख लिया था इसीलिए उन्होंने हमेशा अतियों से बचने का सलाह देते हैं। व्यवहार, विचार, रहन—सहन, वेशभूषा आदि सभी में अति से बचने का सलाह दिया है क्योंकि अति से दुःख मिलता है और दुःख निवारण मन की जाग्रति में है। जिसका मन जागा है। वह सुखी है, प्रज्ञापलित है।

दस पारमिताएँ — गौतम बुद्ध ने संबोधि प्राप्त करने के लिए 10 पारमिताएँ सद्गुणों का होना अनिवार्य माना है—

1. दान— दान धन से ही नहीं वरन् ज्ञान, मान तथा घर की वस्तुएँ जो कि हम अपने लिए रखे हैं। उसमें जरूरतमंद लोगों का हक है।
2. शील— शील या नैतिकता का व्यवहार करना चाहिए।
3. निष्क्रियता— लोभ, क्रोध मोह, आदि का त्याग करना।
4. प्रज्ञा— जानना, प्रकाशित करना।
5. पुरुषार्थ का पालन करना अर्थात् ईमानदारीपूर्वक मेहनत करके जीवनयापन करना।
6. शांति— शांति का अर्थ है— व्यवहार में सहनशीलता रखना।
7. सत्य— सदा सत्य का पक्ष लेकर व्यवहार करना।
8. अधिष्ठान— समाधि के लिए दृढ़ निश्चय करना।
9. मैत्री—सभी जीवों के लिए मन में अपनेपन की भावना रखना।
10. उपेक्षा— सदा संसार में व्यवहार करते हुए घटनाओं के साथ समता का अभ्यास करना चाहिए। किसी भी घटना के लिए हमारी दृष्टिकोण तटस्थ होनी चाहिए।

बुद्ध की तीन शिक्षाएँ— भगवान बुद्ध ने ज्ञान के सारांश के रूप में तीन शिक्षाएँ दी है—

1. **बुद्धम् शरण गच्छामि—** बुद्धम् शरणम् का अर्थ है कि जो जाग्रत हो, सद् ज्ञानी हो, जिसका विवेक जागा हुआ हो, जो सेवा, त्याग, अहिंसा को अपनाया हो, जो अनुशासित हो, जो दूसरों के सुख—दुःख में संवेदनमय हो, जो लोभ, मोह, शोक से परे हो, जो

सद्मार्ग सुझाता हो उसके शरण में जाओ। न कि किसी सशरीर के शरण में क्योंकि अन्यत्र मन की चिंताएँ, डर, भय शारीरिक व मनासिक रूप से बना रहता है। गौतम बुद्ध ने अपने पास कभी नहीं बुलाया। वह जाओ कहा, जहाँ बुद्धत्व मिले, जहाँ ज्ञान मिले, जहाँ बोध हो कि वह क्या, कैसे, और क्यों है? इसके लिए व्यक्ति को धम्म की ओर जाना होगा।

2. धम्मम् शरणम् गच्छामि— बुद्ध कहते हैं कि धर्म की शरण में जाओ, मानव धर्म की शरण में, जिससे विश्वशांति, सद्भाव तथा सम्मति सबको समान रूप से मिल सके। किसी रंग—रूप, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय आदि में नहीं वरन् शिक्षा के शरण में जाओ क्योंकि उससे ही मोक्ष मिलेगा। मुक्ति तभी मिलेगा, जब वह संघ की ओर वह जायेगा। मानव विकास का यही एक मार्ग है। जिस ओर व्यक्ति को गच्छामि अर्थात् गमन करना होगा।

3. संघम् शरणम् गच्छामि— जो लोग शिक्षा के कार्य में ज्ञान के सहारे आत्म—जन जाग्रिति में लगे हैं उसके शरण में जाओ उसी से मुक्ति मिलेगी। किसी क्लब, समिति, सभा में नहीं क्योंकि वहाँ ढकोसला हो सकता है। जिससे दिग्भ्रमित हो जाओगे, कुमार्ग को ही सद् मार्ग समझने लगोगे, तब बुद्धत्व को प्राप्त नहीं कर पाओगे। नित्य नवीन घटनाओं को स्वीकारना होगा।

समसामयिक संदर्भ में जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय से उपर सद्मार्ग प्रशस्त करने वाला गौतम बुद्ध ही है; भारतीय इतिहास में इनके सर्वांश अनुयायी हुए डॉ भीमराव अम्बेडकर जी जिसका ज्ञान बुद्धम् रहा। संभवतः इसी के चलते इसे नवबुद्ध कहा गया। जो बुद्ध होगा, वह सत्य को स्वीकार ही करेगा। छत्तीसगढ़ में ऐसा गुरु घासीदास जी एकमात्र दिखायी पड़ता है। जिसका मूल दर्शन सत्य ही ईश्वर है तथा मानव—मानव एक समान कहा है। जो आडम्बर से हमेशा दूर रहते हुए, बुद्धत्व को प्राप्त कर लोगों को सत्य का दर्शन कराया। जब बुद्धम् शरणम् गच्छामि तब धम्मं शरणम् गच्छामि, धम्मं शरणम् गच्छामि तब संघम् शरणम् गच्छामि!! अर्थात् जब प्रज्ञा को प्राप्त करना है तब धर्म नैतिक आचरण सत्य को अपनाना होगा और धर्म को अपनाने के लिए संघ अर्थात् एकता के साथ रहना होगा।

संदर्भ सूची

1. कोसम्बी धर्मानंद, भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन 2011।
2. साँकृत्यायन राहूल, महामानव बुद्ध 2010।
3. सं. एस एस गौतम, भारत में बौद्ध धर्म का उत्थान और पतन 2016।
4. सरश्री, भगवान बुद्ध 2016।